

# हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों में हरियाणा सावन

Parul<sup>1\*</sup> Dr. Rajkumar Sharma<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

<sup>2</sup> Associate Professor, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

**सार – लोकगीत किसी भी प्रदेश के जनमानस के हृदय के उद्गार होते हैं जो उनकी आन्तरिक भावनाओं का प्रतिबिम्ब होते हैं। लोकगीत संस्कृति का दर्पण होते हैं जिनमें परम्पराएँ आस्थाएँ-विश्वास, जीवन की गतिविधियाँ निहित होती हैं। ये गीत अज्ञात मानस पुत्र-पुत्रियों द्वारा सृजित किए जाते हैं। इनकी रचना मौखिक रूप से की जाती है। एक पंक्ति एक न दूसरी अन्य स्त्री द्वारा। इसी प्रकार एक से दूसरी पंक्ति जुड़कर पूर्ण गीत अपना स्वरूप धारण कर लेता है।**

-----X-----

साहित्यकारों तथा विद्वानों ने लोकगीतों की कई परिभाषाएँ दी हैं। उनके विचारों का अवलोकन लोकगीतों की आत्मा के स्वरूप को समझने में सहायक है। ये परिभाषाएँ भले ही पुरानी हैं किन्तु आज भी प्रासंगिक हैं। भले ही समय तथा परिस्थितियों के अनुसार लोकगीतों के विषयों में कुछ नवीनता आ गई है किन्तु जहाँ तक लोकगीतों के मूलतत्त्वों का संबंध है वे अभी भी अपनी मौलिकता बरकरार रखे हुए हैं।

लोकगीतों का जन्म मानव जन्म के साथ ही हुआ था। अपने हर्ष-विषाद, सुख-दुख, आशा निराशा की अभिव्यक्ति उसने पहले कुछ धुनों के माध्यम से की होगी। बोली के उद्भव तथा भाषा के जन्म के साथ ही उसने अपने हृदय के उद्गारों को संगीतबद्ध (धुनों में) किया होगा। ऋग्वेद में यज्ञादि के विधान में शिष्ट तथा संस्कृत जनसमुदाय के विचारों की झांकी मिलती है। अथर्ववेद में लोक संस्कृति का सुन्दर उल्लेख मिलता है।

हरियाणा प्रदेश में लोकगीतों की सुन्दर परम्परा है जो संगीत धारा के रूप में निरन्तर युगों-युगों से बहती आ रही है। कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भी लोकगीतों के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं डॉ ग्रियर्सन के अनुसार “लोकगीत संभवतः अनखुदी खान है, उनकी एक भी पंक्ति ऐसी नहीं है, जो प्रकाशित होने पर भाषा-विज्ञान भी किसी न किसी ग्रंथि को सुलझाने के लिए मूल्यवान सामग्री प्रस्तुत न करे।”[1]

राल्फ विलियम्स के अनुसार, “लोकगीत न पुराना होता है न नया। वह तो उस जंगली घास के वृक्ष की तरह होता है, जिसकी जड़े अतीत की गहराई में धंसी होती हैं, परन्तु फिर भी जिस पर

नई डालियाँ, नए पत्ते तथा नए फल निरन्तर निःसृत होते रहते हैं।”[2]

“लोकगीत उस जनसमूह की संगीतमयी काव्य रचनाएँ हैं जिसका साहित्य लेखनी अथवा छपाई से नहीं वरन् मौखिक परम्परा से अविरल प्रवाह मान रहता है।”[3]

“आदिकालीन स्वतः स्फूर्त संगीत को लोकगीत कहा जाता है।”[4]

“लोकगीत अपने आप बनते हैं।”[5]

“सूर्यकरण पारीकः नरोत्तम स्वामी के अनुसार” लोकगीत मानव जीवन की, उसके उल्लास की, उसकी उमंग की, उसकी करुणा की, उसके रुदन की, उसके समस्त सुख-दुःख की कहानी है।”[6]

डॉ0 रमाकान्ता लोकगायिका के अनुसार- “लोकमानस के द्वारा रचित संगीतबद्ध गेय रचना जिसमें उसकी सामाजिक परम्पराएँ एवं संस्कार स्वरों का आवरण धारण कर लोकमानस के कोकिल कंठों से गुंजरित होती है, उसे लोक गीत कहते हैं।”[7]

हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों को संस्कार गीत, ऋतुगीत अनुष्ठानिक एवं मांगलिक गीत, पर्वोत्सव गीत एवं विविध गीतों में वर्गीकृत किया जाता है। संस्कार गीतों में सोलह संस्कार रीत-गीत, ऋतु गीतों में सावन-फागुन रीत-गीत, आनुष्ठानिक गीतों में मंगल रीत-गीत, पर्वोत्सव गीतों में संकरात, होली, जन्माष्टमी, सलूमण देवोठनी ग्यास, तुलसी

विवाह, गोगा पीर, बासोयड़ा, गोवर्धन पूजा तथा कनागत आदि रीत-गीत सम्मिलित हैं।

हरियाणा में ऋतुओं का विशेष महत्त्व है। इन ऋतुओं में सामण (सावण) तथा फागण (फागुन) अपनी हरियाली तथा मस्ती के लिए प्रसिद्ध है। सावन मास का बहु-बेटियों से विशेष नाता है क्योंकि इस मास में आने वाले तीज-त्यौहार पर बहु-बेटियों के हृदय में विशेष उत्साह तथा चाव होता है।

निसंदेह ऋतु परिवर्तन जीव-प्राणी के जीवन को न केवल बाहर से प्रभावित करता है अपितु उसके भीतर के मन को भी उमंग से भर देता है। चतुर्मास के आषाढ़ महीना पूरा भीषण गर्मी के प्रकोप से मानव जीवन को त्रस्त कर देता है।

ये चारमास आषाढ़, सामण, भादों तथा आसुज इस प्रदेश के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन को प्रभावित करते हैं। इससे पहले जेठ के महीने की भीषण गर्मी धरती के जीव-प्राणियों को झुलसा देती है। पशु-पक्षी भी व्याकुल रहते हैं। सावन मास की वर्षा की बूंदें त्रस्त धरती की प्यास बुझाती हैं। जनमानस को राहत मिलती है। प्रकृति में चारों ओर हरियाली छा जाती है। धरती पर एक अनोखा सुन्दर लावण्य छा जाता है। हरी-हरी घास की मखमली कालीन धरती का फर्श बन जाती है। किसान का मन प्रसन्न हो जाता है। उसके मन में अच्छी फसल की आशा जागती है। चारों ओर चहल-पहल तथा रौनकें लग जाती हैं। पशुओं के लिए भरपूर चारा स्वयं पैदा हो जाता है।

काले-काले बादल, कभी छोटी, कभी मोटी तथा कभी मूसलाधार वर्षा, दादुर, मोर, पपीहा के मधुर बोल, मेंडक की टर-टर की आवाज, भंवरो की गुंजार वातावरण को मोहक बना देती है। हरियाणा के लोकगीतों में सावन मास की सुन्दर एवं मोहक झाँकी एक गीत के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त की गई है-

**हरी-हरी घास अर काले-काले बादल**

**कोय-कोय पड़ै हे फुहार मेरी नणदी**

**झूल घला दे बागां म्हं**

**सिमट-सिमट जल भरे तलाबां**

**जोहड़ बावड़ी ताल मेरी नणदी**

**झूल घलां दे बागां म्हं**

**दादुर मोर पपीहा बोलै**

**भोर्या की गुंजार मेरी नणदी**

**झूल घला दे बागां म्हं**

सावन मास में प्रकृति का रूप लुभावना होता है। चारों ओर फैली हरियाली तन-मन को पुलकित एवं रोमांचित करती है। आम तथा अन्य पेड़ों की डाली पर झूल डाल दी जाती है। झूल पर नवयौवनाएँ झूलती हैं तथा वर्षा का आनन्द लेती हैं। सारा वातावरण उनके गीतों की धुनों से नादमय हो जाता है। एक गीत में ये भाव इस प्रकार अभिव्यक्त होते हैं-

**सखी बादल घिर-घिर आए हाँ आए**

**या छाई बदरिया सामण की**

**सखी बादल झुक-झुक आए, हाँ आए**

**झुक आई बदरिया सामण की**

**सामण गरजै भादो बरसै**

**मेरा पींग चढ़ण नै मन तरसै**

**सब सखियाँ रलमिल जावें- हाँ जावें**

**घिर आई बदरिया सामण की।**

सावन मास में सहेलियाँ मिलकर, साजसिंंगार करके हाथ में झूल (रस्सी) तथा पटड़ी लेकर झूलने के लिए जाती हैं तथा आनन्द से झूलती हैं-

**झूल पाटड़ी ले कै चाली, झूलण नै सखीच्यार,**

**चूड़ी मेंहदी, बिन्दी लाई, कर सोला सिंगार,**

**वे तो झूल्लै सहेली च्यार, पपैया बोल्या पीपली।**

**आया-आया री सामणिया मास, पपैया बोल्या पीपली।**

सामण मास में हरियाणा में 'तीज' का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। 'तीज' से हरियाणा में त्यौहारों का शुभारम्भ होता है। यहाँ यह कहावत प्रसिद्ध है "आई तीज, बखेर गई बीज।" अर्थात् तीज से त्यौहार आरम्भ हो जाते हैं। सावन के आरम्भ में ही परिवारों में बहु का 'सिंघारा' तथा बेटे की 'कोथली' भेजने की तैयारी शुरू हो जाती है। बेटे चाहे कितनी भी बूढ़ी हो जाए उसकी 'कोथली' अवश्य भेजी जाती है। 'सिंघारा' बहु के लिए भेजा जाता है। लड़के का विवाह

संबंध तय हो जाने पर विवाह से पहले ही लड़के वाले बहु के घर 'कच्चा सिंघारा' लेकर जाते हैं।

'कोथली' में बेटी के लिए वस्त्र, शृंगार का सामान, चूड़ी-मेंहदी, घेवर, सुहाली तथा मिठाई भेजी जाती है। कोथली माँ-बाप, भाई-भाभी की ओर से भेजी जाने वाली आशीर्वाद का प्रतीक होती है जिसे "लाड पोटली" भी कहा जाता है। एक गीत इन भावों को सुन्दर ढंग से व्यक्त करता है-

मीठी तै कर दे री अम्मा कोथली

जांगे बाहण कै री देस, पपैया बोल्या पीपली।

क्यांहे की कर दयूं रे बेटा कोथली,

क्यांहे म्हं जाओ परदेस, पपैया बोल्या पीपली

गुड़ की तै (सुहाली) कर दे री अम्मा कोथली

मोटर म्हं जावाँ परदेस पपीहा बोल्या पीपली

पपैया बोल्या पीपली का अर्थ है सामन का आगमन। सावण मास के लोकगीत संयोग तथा वियोग दोनों भावों को व्यक्त करते हैं। बेटी यदि ससुराल में सुखी है तो संयोग है तथा यदि दुःखी है तो वियोग। जिनके पति जीविका कमाने के लिए परदेस गए होते हैं उनका मन वर्षा की बूंदों से शान्त नहीं होता बल्कि उनकी पीड़ा को अधिक बढ़ा देता है।

एक सुखी बेटी का पीहर में रहने का सुख तथा एक बहु को ससुराल में मिलने वाली यंत्रणा का एक लोक गीत सुन्दर उदाहरण है-

काची कचरी हे माँ मेरी कचकची जी

हाँ जी कोय कड़वे सासड़ के बोल

बड़ा ए दुहेला हे माँ मेरी सासरा जी,

पाकी कचरी हे माँ मेरी रसभरी (पकपकी) जी

हाँ जी कोय मीठड़े मायड़ के बोल

बड़ा ए सुहेला, हे माँ मेरी मायका जी

सासरे म्हं बहुअड़ हे माँ मेरी न्यून रहें जी

हाँ जी जणु जलै कड़ाई म्हं तेल

बड़ा ए धवेला, हे माँ मेरी सासरा जी

पीपर म्हं बेटी, हे माँ मेरी न्यून रहें जी

हाँजी जणु रहै धीलड़ी म्हं घी,

बड़ा ए सुहेला, हे माँ मेरी मायका जी।

हरियाणा प्रदेश में नवविवाहिता पहला सावन विशेषकर तीज का त्यौहार अपने पीहर में ही मनाती हैं। लोकगीतों में ससुर, जेठ, देवर आदि का उसे लिवा कर ले जाने का उल्लेख मिलता है किन्तु वह कई बहाने बना कर ससुराल जाने से मना कर देती है, क्योंकि ससुराल में पति की अनुपस्थिति में उसे ससुराल अच्छा नहीं लगता।

पति कमाई करने बाहर गया हुआ है। पति के बिना ससुराल में सावन में तीज मनाना उसे असह है। वर्षा की बूंदें उसके विरह को दूना कर देती है। पति द्वारा लेने आने पर वह प्रसन्नता पूर्वक ससुराल चली जाती है। एक गीत इन भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है-

नान्ही-नान्हीं बुँदिया हे माँ मेरी पड़ रही जी,

हां जी कोय आई सैं रंगीली तीज

झूलण जागी, हे माँ मेरी बाग म्हं री

सुसरा आया हे माँ मेरी लेण नै री

हाँ जी कोय ना जाऊँ बुड़ड़े की गैल

झूलण जाँगी, हे माँ मेरी बाग म्हं री

कथा (पति) आया हे माँ मेरी लेण नै री

हाँ जी कोय इब जाऊँ कथा की गैल

तीज के अवसर पर पति के साथ होने पर नवविवाहिता संयोग बेला में आनन्द सुख प्राप्त करती हैं। पीपल, बड़ तथा नीम की मोटी डाली पर झूला डालकर ऊँची-ऊँची पींग भरती हैं। इस अवसर सभी महिलाएँ नई चूड़ियाँ, रंगबिरंगी छट्टा वाली जंगाली (चूड़ी) पहनती हैं। मनियारा कुछ दिन पहले ही गलियों में चूड़ियाँ पहनाने की आवाजें लगानी शुरू कर देता है। एक भाभी अपनी ननद को घर में मनियारे को बुलाकर लाने को कहती है तथा भाभी को चूड़ी पहनाने को कहती है किन्तु वह पति के पसन्द या पति के रंग की चूड़ी पहनने से इंकार कर देती है-

अली-गली अरी नणदी मनरा फिरे

अरी नणदी मनरे नै ल्याओ नै बुलाय  
चूड़ा तै मेरी जान, चूड़ा तै हाथी दाँत का

अरे मनरा, चूड़े का मोल बताय  
चूड़ा तो मेरी जान चूड़ा तै हाथी दाँत का

धौली जंगाली रे मनरा, ना पहरू,

अरे मनरा, धौले म्हारे राजा जी के दाँत, साँवरिया जी के दाँत

चूड़ा तै मेरी जान, चूड़ा तै हाथी दाँत का

नवविवाहिता अपने पीहर में मनाई गई तीज के पलों को याद करती है तथा अपनी सहेलियों से उन स्मृतियों को साँझा करती हुई एक गीत गाती है-

नान्ही-नान्हीं बुंदियाँ हे, सामण का मेरा झूलणा

एक झूला झूला मनै बाबल के राज म्हं

संग सहेलियों का, सामण का मेरा झूलणा

एक झूला झूला मनै, भाई के राज म्हं

गोद भतीजा हे, सामण का मेरा झूलणा

हरियाणा प्रदेश में सावन के लोकगीतों में बारहमासा गीत भी गाए जाते हैं। सावन के लोकगीतों में विरहणि की पीड़ा, कसक तथा वेदना है, किशोरियों के लिए प्रसन्नता, नए वस्त्र, मिठाई झूला झूलने की उमंग है तथा प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य के दर्शन हैं। निसन्देह ये गीत जनमानस के मुँह बोलते सजीव चित्र हैं।

### सन्दर्भ सूची

1. Dr. S.G. Grierson (1883). Journal of Royal Asiatic Society Book-III, Part-1, p. 32.
2. Encyclopaedia Britannica, Vol. XIV, (1950), p. 448
3. बन्दोबस्त रिपोर्ट जिला हिसार, पृ0 63-94
4. हिन्दू स्टैंडर्ड डिक्शनरी ऑफ फॉकलोर, मैथालाजी एंड लिजिण्ड, वा. पृ0 1039
5. Columbia Encyclopaedia, p. 737

6. भारतीय लोकगीतों में हरियाणा का योगदान, डॉ0 रमा कान्ता, पृ0 26

Corresponding Author

Parul\*

Research Scholar, Department of Music, Sunrise University, Alwar, Rajasthan